eISSN 3049-2610
Research Stream
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 03, Issue 01, March 2026

बाबर और बाबरी मस्जिद की पड़ताल 'कितने पाकिस्तान'

डॉ चन्दन कुमार[1]
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर (हिंदी विभाग) राजकीय महाविद्यालय, पचमोहिनी सिद्धार्थनगर उ0प्र0

Received: 20 March 2026 Accepted & Reviewed: 25 March 2026, Published: 31 March 2026

Abstract

अपनी उम्र पाँच हजार साल बताने वाले कमलेश्वर ने अपने अन्तिम और सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपन्यास 'कितने पाकिस्तान' के कथानक में भी पाँच हजार वर्षों के इतिहास को समेटा हे। इस उपन्यास की कथा का प्रसार सुदूर अतीत से लेकर कारगिल युद्ध (1999) तक है। इसमें अतीत, इतिहास, परम्परा का इस्तेमाल इस रूप में किया गया है कि वह हमारे वर्तमान के कुछ अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रश्नों और समस्याओं को समझने की एक नई दिशा और सही चिन्तन पद्धति देता है। कमलेश्वर का अदीबे आलिया, अर्दली महमूद अली से कहता है– लेकिन मैं उतने ही अतीत को देखना और समझना चाहता हूँ जो इस वर्तमान पर अपनी काली छाया डालकर हमारी आज की जिन्दगी में नफरत और प्रतिशोध के पाकिस्तानों की नींव डालना चाहता है।''[1] यहाँ कमलेश्वर ने एक इतिहासकार की भूमिका का निर्वहन ठीक ई.एच. कार के तथ्यों के चुनाव वाले सिद्धान्त के अनुसार किया है। ई.एच. कार ने लिखा है। ''तथ्य अलौकिक पवित्र नहीं हैं क्योंकि हम तथ्यों को अपनी इच्छा के अनुसार चुनते हैं और अपने तरीके से उनका प्रयोग करते हैं। ... इतिहास जॉचे–परखे तथ्यों का एक संग्रह है। ये तथ्य इतिहासकार को दस्तावेजों, शिलालेखों आदि से इस तरह प्राप्त होते हैं जैसे मछली बेचने वाले की तश्तरी में रखी मछलियाँ। इतिहासकार उन्हें इकट्ठा करता है, उन्हें अपने घर ले जाता है और उन्हें उस तरीके से पकाता परोसता है जो उसे अच्छा लगता है.... तथ्य केवल तभी बोलते हैं जब इतिहासकार उन्हें बोलने के लिए कहता है।''[2] इस प्रकार इतिहास लेखन में इतिहासकार की अपनी सोच एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। कमलेश्वर ने भी शाही दरबारी, सरकारी इतिहासकारों के इतिहास (बादशाहनामा, आलमगीरनामा, वकाते आलमगीर, मुन्तखब उल–लुवाब आदि–आदि) से अलग उनके तर्कों की गवाही से अलग 'एक अदीब के दिल की गवाही' द्वारा जो सच्चा इतिहास लिखा है वह शोषित और दलित देशों की आत्मा पर उत्कीर्ण सच्चाईयों के ज्यादा करीब ले जाता है पाठकों को।

मुख्य शब्दः हिन्दी सहित्य, बाबर, बाबरी मस्जिद की पड़ताल, कितने पाकिस्तान

Introduction

परेशानी और जद्दोजहद में उपन्यास का 'अदीबे आलिया' पूरी दुनिया विशेषकर भारत के सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक धार्मिक इतिहास को अनेक ज्ञात अज्ञात ऐतिहासिक प्रमाणों, दस्तावेजों, जनश्रुतियों, मिथक कथाओं, जादुई यथार्थ तथा फन्तासी की कल्पना से खंगालता है। इसीलिए इस उपन्यास का नायक महानायक और खलनायक समय को ही बनाया गया है। समय की नजरों से पाठक विभिन्न ऐतिहासिक सच्चाइयों, धर्म के दुरुपयोगों, षड्यंत्रों, बर्बर हत्याओं का पर्दाफाश होते

eISSN 3049-2610
Research Stream
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 03, Issue 01, March 2026

देखता चलता है। 'कितने पाकिस्तान' एक तरह से इतिहास का एक्सरे करते हुए इंसान के दिल और दिमाग पर चढ़ी मनों फफूद को उतारने का प्रयास करता है। दिलचस्प बात है कि उपन्यास की संरचना के ताने–बाने के रूप में इतिहास मौजूद है लेकिन फिर भी यह उन प्रचलित अर्थों में ऐतिहासिक उपन्यास नहीं है जिन अर्थों में वृन्दावनलाल वर्मा, रांगेय राघव, चतुरसेनशास्त्री राहुल सांकृत्यायन के उपन्यास या जयशंकर प्रसाद के नाटक हैं। 'कितने पाकिस्तान' में इतिहास किसी ठोस कालखंड में बंधा, किन्ही खास पात्रों, घटनाओं, समस्याओं से घिरा पीरियड नहीं है। वह वक्त के साथ रवानगी में बहता, खंडों में विभक्त होते हुए भी अखंड चरित्र का आभास देता है। इतिहास उपन्यास में आद्यन्त छाया है। प्रागैतिहासिक काल विश्व की पुरासभ्यताओं, मिस्र, सुमेरी, अक्कादी, बेबीलोनिया, मेसोपोटामिया, सिन्धु घाटी से लेकर अफगानिस्तान, सर्बिया, फिलिस्तीन, जार्डन, इंडोनेशिया में होने वाले नरसंहारों तक। दरअसल अदीब ने इतिहास को समय के कटघरे में खड़ा करके 'तहजीब के जिस्म पर लगे जख्मों को जानने की जिम्मेदारी उठा ली है।''[3] इसलिए इन्साफ करने का हक सिर्फ अदीब को है। अदीब की अदालत में अलग–अलग किरदारों में हजारों बरस बूढ़े इतिहास को पेशकर साम्राज्यवादी ताकतों द्वारा रचे और महिमामंडित किए गए इतिहास का आज अदीब की संवेदनात्मक, संदेहात्मक, विश्लेषणात्मक और सृजनात्मक दृष्टि से देखे जाने की जरूरत है। खासतौर पर तीसरी दुनिया के देशों के लिए हीनता–बोध से उबरने, अपनी जड़ों से जुड़ने, अपनी अस्मिता को तलाशने और अपनी पराजयों को खंगालने के आत्मविश्लेषणात्मक दौर में उस सारे इतिहास का पुनर्लेखन आवश्यक हो गया है। जो साजिशों, उम्मीदों, प्रतिशोधों, हवसों और वहसी जुनूनों के चलते इन्सानियत और तहजीब दोनों का अंग–भंग करता आया है। जो विजेताओं और विजितों को दो दुनियाओं में बाँटकर विजेताओं के सच को अंतिम सच का दर्जा देता आया है। इसीलिए 'कितने पाकिस्तान' ऐतिहासिक उपन्यास नहीं बल्कि इतिहास अध्ययन का उपन्यास है। बहुआयामी और परिवर्तनशील इतिहास को नए कोण से देखना और उस कोशिश में व्यक्ति समाज और वक्त की मानसिकता को पढ़ना 'कितने पाकिस्तान' का केन्द्रीय सरोकार है।

भारतीय इतिहास को साम्प्रदायिक रंग में रंगने वाला एक महत्वपूर्ण मुद्दा है अयोध्या की बाबरी मस्जिद और रामजन्मभूमि मन्दिर विवाद। 'कितने पाकिस्तान' के अदीब की अदालत में इस समस्या का बखूबी समाधान हुआ है। बाबरी मस्जिद की उलझी हुई गुत्थियों को अदीब ने 4 सबूतों के माध्यम से सुलझाया है। पहला खुद बाबर का हलफिया बयान दर्ज हुआ है। दूसरा ए. फ्यूहरर का बयान है, तीसरा एच.आर. नेविल के फैजाबाद गजेटियर के 1,74,000 हिंदुओं के कत्ल का झूठ है और चौथा अप्रैल से सितम्बर 1528 के बाबरनामा के गायब पन्नों का जिक्र है, जिसके द्वारा अंग्रेजों की नीति और बाद के सांप्रदायिक दंगों के सच को समझा जा सकता है। बाबर काबुल की कब्र से अदीब की अदालत में हाजिर होकर यह स्वीकार करता और बताता है कि ''मैंने कोई मन्दिर मिसमार नहीं किया और न हिन्दुस्तान में कोई मस्जिद अपने नाम से कभी बनवाई... मैंने तो कभी तुलसीदास का नाम तक नहीं सुना, जिसने हिन्दुओं के राम को भगवान बनाया। मेरे दौर में राम थे ही नहीं, तो मैं उनका मन्दिर क्यों तोड़ता? उस वक्त हिन्दुओं के कृष्ण को भगवान और अवतार मंजूर किया जा चुका था।

eISSN 3049-2610
Research Stream
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 03, Issue 01, March 2026

उनका जन्म स्थान मथुरा में था। मेरी राजधानी आगरा से सिर्फ पच्चास मील दूर, अगर मुझे तोड़ना ही होता तो मैं कृष्ण का जन्मस्थान न तोड़ता? भागा–भागा अयोध्या तक जाके राम का जन्मस्थान क्यों तोड़ता? क्योंकि राम तो भगवान हुए तुलसीदास के बाद और मेरे सामने तुलसीदास बच्चा था। उसने रामायण मेरे मरने के बाद लिखी।''[4] बाबर के इस तर्क में ऐतिहासिक सच्चाई है क्योकि मथुरा में बल्लभाचार्य, सूरदास, अष्टछाप के कवियों द्वारा कृष्ण पूजा शुरू हो चुकी थी, जबकि रामानन्दी संप्रदाय के तुलसीदास ने रामचरितमानस 1574–76 में लिखकर राम को हिन्दू धर्म में लोकप्रिय भगवान बनाया। जिस मस्जिद का पुनर्निमाण मीरबाकी ने चापलूसी के लिए बाबर के नाम पर चस्पाँ कर दिया। वही साम्प्रदायवादियों के लिए 'हिंदुत्व के खतरे' का प्रतीक बन गई। 6 दिसम्बर 1992 को जन–कलरव के बीच खनकती ईंटों ने भारत को 'हिंदू' का प्रतीक बना दिया। वस्तुतः एक बार प्रतीक के दायरे में आ जाने के बाद आप किसी भी स्थान या शख्सियत का दुरुपयोग कर सकते हैं। प्रतीकों के अनुरूप अतिव्याख्याएँ या कुव्याख्याएँ होती हैं साथ ही मिथक गढ़े जाते हैं। अभी तक बाबरी मस्जिद के बाबर द्वारा बनवाये जाने के सभी प्रमाण मिथकों से ही आए हैं। उन मिथकों और अंधविश्वासों के सामने इतिहास सम्मत तथ्य भी बेमानी हो जाते हैं, क्योंकि उन मिथकों को ही जनता प्रमाण स्वरूप आत्मसात कर लेती है। विश्वासों से जुड़ी घटिया राजनीति के तहत ही मकबूल फिदा हुसैन की चित्रकारी को अनैतिक करार दिया जाता है, जो मनुष्य और देवता में कोई फर्क नहीं स्वीकारती।

बाबरी मस्जिद की सच्चाई की शिनाख्त के लिए ए. फ्यूहरर के बयान का भी हवाला देना जरूरी है, ताकि उसके निर्माण की गुत्थी सुलझायी जा सके। ए. फ्यूहरर अदीब को बताता है कि ''हिजरी 930 यानी करीब 17 दिसंबर सन् 1523 में इब्राहिम लोदी ने उस मस्जिद की नींव रखवाई थी और जो 10 सितम्बर 1524 में बनकर तैयार हुई, जिसे अब बाबरी मस्जिद कहा जाता है। ... इस खुतबे को वक्त ने नहीं, उन लोगों ने बर्बाद किया है, जो बाबरी मस्जिद और रामजन्म भूमि मन्दिर के झगड़े को जिन्दा रखना चाहते हैं।''[5] इब्राहिम लोदी पर यह मनगढ़न्त आरोप सिर्फ इसलिए नहीं लगा कि वह आक्रान्ता नहीं था और उसकी रंगों में हिन्दू दादी का खून बह रहा था, जबकि बाबर आक्रान्ता भी था और चंगेज खाँ, तैमूर लंग का वंशज था। उस पर झूठा इल्जाम आसानी से विश्वास योग्य मान लिया गया। गौरतलब है कि यह इल्जाम अंग्रेजों द्वारा ही संपन्न हुआ, जो इस मुद्दे द्वारा सांप्रदायिक माहौल बनाए रखना चाहते थे। यहाँ यह जानना अप्रासंगिक न होगा कि रामजन्मभूमि मन्दिर के पीछे कोई ऐतिहासिक तथ्य न होकर अंधविश्वास, राजनीति एवं सत्ता हड़पने की नीति ही काम कर रही है। झगड़ा केवल ऐतिहासिक तथ्यों का नहीं है। इस झगड़े की जड़ में है भारतीय राजनीति का व्यापक सांप्रदायिकीकरण। इस मुद्दे पर अयोध्या और राम से सम्बन्धित ऐतिहासिक साक्ष्यों की समीक्षा करना आवश्यक है क्योंकि समाज में सांप्रदायिकता फैलाने के लिए लगातार उपयोग किया गया और किया जा रहा है। क्या अयोध्या राम का जन्मस्थान है? क्या वर्तमान अयोध्या और रामायण में वर्णित अयोध्या एक है? माना जाता है कि राम का जन्म त्रेतायुग में हुआ जबकि अयोध्या में बस्ती का प्राचीनतम प्रमाण 800 ई.पू. माना गया। पाँचवी शदी के गुप्त नरेश स्कन्दगुप्त

eISSN 3049-2610
Research Stream
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 03, Issue 01, March 2026

'विक्रमादित्य' ने साकेत नगरी को अयोध्या नाम दिया। इस पूरे विवाद पर एक पुरजोर बहस कर एक सेमिनार में, 'सेंटर फार हिस्टोरिकल स्टडीज' जे.एन.यू. द्वारा प्रकाशित एक लेख में राम और अयोध्या से जुड़े तमाम मिथकों को तोड़ा है जैसे उसमें कहा गया कि ''अभी तक ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता जिससे निश्चित रूप से कहा जा सके कि बाबरी मस्जिद का निर्माण ऐसी जगह हुआ है जहाँ पहले एक मन्दिर था।''[6] और इस सेमिनार पत्र में आगे कमलेश्वर के 'कितने पाकिस्तान' के निष्कर्षों से मिलता–जुलता निष्कर्ष भी दिया गया है कि 'उन्नीसवीं शताब्दी में पहली बार यह कहानी प्रचलित हुई और सरकारी दस्तावेजों में इसे (रामजन्मभूमि मन्दिर के तोड़े जाने को) स्थान दिया गया। फिर यही दस्तावेज दूसरों द्वारा प्रामाणिक ऐतिहासिक साक्ष्य के रूप में उद्धृत हुए।... मंदिर के तोड़े जाने के कथा की ऐतिहासिक प्रामाणिकता के परीक्षण के बिना ही उसे इस क्षेत्र के अंग्रेजी दस्तावेजों में ज्यों का त्यों रख दिया गया। (देखिए, पी 'कार्नेगी, हिस्टारिकल स्केच ऑफ तहसील फैजाबाद, जिला फैजाबाद, लखनऊ, 1870, एच.आर. नेविल, फैजाबाद डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, इलाहाबाद, 1905)।''[7] अतः जहाँ एक तरफ इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि बाबरी मस्जिद एक मन्दिर को तोड़कर बनवाई गई है, वहीं यह भी मानना होगा (बाबर के औपन्यासिक कथन से भी) कि मध्यकालीन स्रोतों के अनुसार मुसलमानों के लिए इस मस्जिद का कोई विशेष धार्मिक या सांस्कृतिक महत्व नहीं था। बाबरी मस्जिद और रामजन्मभूमि मन्दिर को इतिहासकार के.एन. पणिक्कर सिर्फ इतिहास का राजनीतिक दुरुपयोग मानते हुए लिखते हैं ''अयोध्या में मन्दिर बनाने के सवाल पर जिस तरह हिंदुओं को उकसाया गया, उससे भारत की धर्मनिरपेक्ष राजनीति हिल उठी। मन्दिर का आंदोलन विश्व हिंदू परिषद् द्वारा आरंभ किया गया और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) तथा राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (आर.एस.एस.) के सक्रिय सहयोग से चला। मंदिर अभियान बाहरी दिखावे के लिए धार्मिक किंतु वास्तविक अर्थों में राजनीतिक था।''[8] जाहिर है बाबरी मस्जिद का सिर्फ राजनीतिक इस्तेमाल किया गया। हिन्दुओं और मुसलमानों की आस्था और विश्वास को झूठे ढ़ाँचे के द्वारा कभी अंग्रेजों द्वारा कभी कांग्रेसियों और कभी भाजपाइयों द्वारा छला गया। बहरहाल कमलेश्वर ने इसी झूठे दुरुपयोगों की राजनीति से पाठकों को उन अभियुक्तों से रू–ब–रू करवाया है जो इस झूठ के सच और सच के झूठ में लिप्त थे।

बाबरी मस्जिद प्रकरण में बाबर के सामने ए. फ्यूहरर को खड़ा कर कमलेश्वर ने इतिहास के 'घटित' होने और दर्ज होने के बीच मौजूद गहरी खाई को सामने लाया है। 1889 में 'बाबरी मस्जिद' में लगे शिलालेख को पढ़कर ए. फ्यूहरर ने मस्जिद निर्माण में बाबर की भूमिका को सिरे से निरस्त करते हुए जिस सच्चाई का बयान किया था, उसे एच.आर. नेविल ने फैजाबाद गजेटियर में साफ उलट दिया और उसमें शैतानी से यह दर्ज किया कि बाबर अयोध्या में एक हफ्ते ठहरा और उसी ने प्राचीन राममन्दिर का मिसमार किया और मस्जिद की तामीर करवाई। ए. फ्यूहरर, एच.आर. नेविल के इस करतूत को स्पष्ट करते हुए कहता है ''हमारी पालिसीज बदली और तब यह तय किया गया कि हिन्दू और मुसलमान, जो 1857 में एक हुए थे, उन्हें अलग–अलग रखा जाए, नहीं तो अंग्रेज हुकूमत चलने नहीं पाएगी। इसीलिए मैंने बाबरी मस्जिद पर लगा इब्राहिम लोदी का जो शिलालेख पढ़ा था,

eISSN 3049-2610
Research Stream
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 03, Issue 01, March 2026

उसे जान बूझकर मिटाया गया... लेकिन मैंने इसका जो अनुवाद किया था वह आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया की फाइलों में पड़ा रह गया इसी के साथ बाबरनामा के वे पन्ने गायब किए गए जो इस बात का सबूत देते हैं कि यह बाबर अवध गया तो जरूर ... पर कभी अयोध्या नहीं गया।''[9] इसके आगे गुलबदन बेगम (बाबर की बेटी) की कृति हुमायूँनामा के प्रमाण से अदीब ने यह प्रमाणित किया है कि 'बाबरनामा'' के अप्रैल 1528 से 17 सितम्बर 1528 तक के साढे पाँच महीनों के पन्ने इसलिए गायब कराए गए कि अयोध्या की बाबरी मस्जिद को बाबर निर्मित बताया जा सके। जबकि हुमायूँनामा में इस अवधि में बाबर अवध में नहीं बल्कि आगरा में पत्नी मेहम बेगम, पुत्री और पुत्रों के साथ रहा।

अंग्रेजों द्वारा दबाए गए 'सही इतिहास' को उभारने में कमलेश्वर ने अदीब की भूमिका में गुरुतर भूमिका निभाया है। वे नेविल द्वारा तैयार फैजाबाद गजेटियर से फैजाबाद–अयोध्या की 1881 की कुल आबादी 11,643 का आँकड़ा उद्धृत करते हैं और एक प्रखर बौद्धिक की तरह यह प्रश्नचिन्ह लगाते हैं कि इतिहासकार कनिंघम द्वारा लखनऊ गजेटियर में 1528 में अयोध्या के 1,74,000 हिन्दुओं के खून से बाबरी मस्जिद का निर्माण कैसे हो सकता है? अर्थात यह गजेटियर भी बाकी झूठों की तरह हिन्दुओं और मुसलमानों में फूट डालने की नीति का ही हिस्सा रहा। कुल मिलाकर इन जिरहों से बाबरी मस्जिद और मन्दिर प्रकरण पर धूल की जो पर्त–दर–पर्त चढ़ाई गई थी (या है), उसको हटाने में यह उपन्यास सफल रहा है।

आजादी के बाद के बिगड़े समीकरण में 60 वर्षों में फैली घनघोर सांप्रदायिकता का ऐसा अवलोकन करने वाला अदीब ही हो सकता था। वह जानता है कि किसी भी रचना या किसी भी यथार्थवादी सिद्धांत को सामने लाने से ज्यादा जरूरी उस सच का पीछा करना है, जिसने भारत के बीस करोड़ मुसलमानों को ''बाबर की संतान'' बना रखा है। एक पार्टी उसी संतान पर ताना–कशी करती हुई अपना वोट बैंक बनाती है। उपन्यास को इतिहास से जोड़कर और भारत के सबसे बड़े साम्प्रदायिक मुद्दे के सच से गुजारते हुए यह चुनौती केवल कमलेश्वर सरीखा उपन्यासकार ही कबूल कर सकता था।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. कितने पाकिस्तान– कमलेश्वर, राजपाल एण्ड संस प्रकाशन दिल्ली–6, नौवां संस्करण–2006, पृ. 173
2. भारत में सांप्रदायिकता – असगरअली इंजीनियर, इतिहास बोध प्रकाशन इलाहाबाद प्रथम संस्करण–2003 पृ. 31
3. कितने पाकिस्तान – कमलेश्वर, पृ. 273
4. वही, पृ. 70
5. वही, पृ. 72

eISSN 3049-2610
Research Stream
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 03, Issue 01, March 2026

6. इतिहास की पुनर्व्याख्या –विपिन चन्द्र व अन्य, राजकमल प्रकाशन दरियागंज दिल्ली, संस्करण–2004, पृ. 140

7. वही, पृ. 140

8. अयोध्याः कुछ सवाल, (मालिनी भट्टाचार्य (संपादक), के.एन. पणिक्कर का लेख 'धार्मिक प्रतीक तथा राजनैतिक सैन्य संचालन अयोध्या में मंदिर के लिए आंदोलन) सारांश प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–1994, पृ. 60

9. कितने पाकिस्तान – कमलेश्वर, पृ. 73